THE BIHAR LEGISLATIVE ASSEMBLY DEBATES.

The 31st March, 1938.

Proceedings of the Bihar Legislative Assembly assembled under the provisions of the Government of India Act, 1935.

The Assembly met in the Assembly Chamber at Patna on Thursday, the 31st March 1938, at 11 A.M., the Hon'ble the Speaker, Mr. Ram Dayalu Sinha, in the Chair.

SHORT NOTICE QUESTION AND ANSWER.

POLICE HIGH-HANDEDNESS WITH REGARD TO THE ARREST OF A LEADING LAWYER AT GAYA.

3. **Mr. BIRENDRA BAHADUR SINHA**: Will Government be pleased to state—

(*a*) whether their attention has been drawn to the publication in a local Daily of the 15th instant of a report of alleged police high-handedness with regard to a leading lawyer of Gaya ;

(*b*) whether Government are aware that on a complaint made concerning an offence which was entertained in the morning of the 5th March, 1938, a respectable and leading lawyer of Gaya was arrested at 9-30 P.M. the same day in his house ;

(*c*) whether opportunity was denied to the said gentleman to dress and whether he was dragged from his office-room by force inspite of expressing his willingness to go peacefully ;

(*d*) whether his request for being taken on his car or in a hackney carriage was disregarded and he was taken in a procession through the streets with a *posse* of 20 or 24 constables armed with *lathies*, who were asked to hold his arms and hands, and whether, the said procession stopped at every convenient crossing and the gentleman was loudly and openly abused and insulted by the sub-inspectors who had effected the said arrest ;

(*e*) whether the complainant and his friends and associates accompanied the said procession and jeered at the arrested gentleman in a revengeful manner ;

(*f*) whether at the thana the said gentleman was instantly hustled in the lock-up, and before he was made to deliver his spectacles and put off his shoes, he was searched in a very insulting manner ;

34 LCD

Mr. CHANDRESHVAR PRASHAD NARAYAN SINHA: Sir, for very good reasons we had decided the other day that we would be sitting from 1st April in the evening but as an expression has been given by the members who reside in the 'R' block that it will be uncomfortable for them to be in their quarters during the mid-day these days, I think, that so far as we are concerned we do not want to stand in the way of their convenience and I would, therefore, request you to maintain the *status quo* in this matter until again the members find it convenient to change their minds.

Dr. SACHIDANANDA SINHA: Sir, in a matter like this there should be a consensus of opinion, but there does not seem to be any prospect of a consensus of opinion on our side here. We therefore feel that perhaps it would be better to stick to the present hours rather than make any change.

The Hon'ble the SPEAKER: Then we will continue as usual.

THE BUDGET—VOTING OF DEMANDS FOR GRANTS.

The Hon'ble the SPEAKER: There are two demands which we have to take up today—Demands nos. 7 and 9. I want to know from the House as to which of these two demands should be taken up first.

Mr. CHANDRESHVAR PRASHAD NARAYAN SINHA: Demand no. 7—Civil Works—before lunch and Demand no. 9—Police—afterwards.

The Hon'ble the SPEAKER: So it is agreed that we should finish "Civil Works" before lunch and take up "Police", after lunch.

CIVIL WORKS.

The Hon'ble Mr. JAGLAL CHAUDHURI: Sir, I beg to move:

That a sum not exceeding Rs. 32,87,496 be granted to the Provincial Government to defray the charges which will come in course of payment during the year ending 31st day of March, 1939, in respect of "Civil Works".

This motion is made on the recommendation of His Excellency the Governor.

QUALITY OF WORKS DONE AT PRESENT IN THE PUBLIC WORKS DEPARTMENT.

***Mr. JAMUNA KARJEE:** Sir, I beg to move:

That the provision of Rs. 2,22,124 for "Original Works—voted" be reduced by Re. 1.

---

* Speech not corrected by the hon'ble member.

जनाब सदर, पी० डब्लू० डी० के बारे में हम लोगों को बहुत ज्यादा शिकायत है और शिकायत इसलिये है कि सूबे की जो आमदनी इस डिपार्टमेंट से है उसका लाखों रुपया उस विभाग में खर्च होता है और जितने रुपये खर्च होते हैं उसके बदले में जितना काम होना चाहिये नहीं होता है। हमने बहुत दफे इस असेम्बली के पहले जो कौंसिल थी उसमें इस बात का जिक्र किया था कि पी० डब्लू० डी० डिपार्टमेंट पब्लिक वेस्ट डिपार्टमेंट है और बिल्कुल सच है। दरअसल जो रुपया इस विभाग द्वारा खर्च किया जाता है उसकी बहुत ज्यादा बरबादी होती है। बहुत दिनों से उसके बरखिलाफ आवाज उठाई जा रही है लेकिन मर्ज ज्यों का त्यों है। इसका इलाज अभी तक नहीं किया गया। मुझे पूरी उम्मीद है कि मौजूदा सरकार पहली सरकार के ऐसे गैर-जवाबदेह नहीं है और मुझे उम्मीद है कि अपनी जवाबदेही इस काम में समझेगी। ऐसी हालत में जनता का एक एक पैसा उपयोग करके अच्छे कामों में खर्च करेगी जो इसके लिए लाजिमी है। गरीब लोग जो खाने को मुहताज हैं बार बार टैक्स देते हैं उसका इस तरह से अनुचित दुरुपयोग होना अच्छा नहीं है।

Dr. Sir GANESH DUTTA SINGH: Sir, may I know how the money is spent *be rahimi se*? I want an explanation from him.

Mr. JAMUNA KERJEE:

मैं माननीय सर गणेश दत्त से कहूंगा कि अभी वे धैर्य रखें तब उनको मालूम होगा कि इस डिपार्टमेंट में कैसी बेरहमी के साथ रुपया खर्च किया जाता है। माननीय सर गणेशदत्त सिंह के हाथ में यह मुहकमा बहुत दिनों से था इसी लिये उन्हों ने इसमें एतराज किया है कि इस डिपार्टमेंट में बेरहमी के साथ रुपया खर्च नहीं किया जाता। मैं तो कहूंगा कि कोई भी काम जो इस डिपार्टमेंट के अन्दर होता है उस रुपये का ५० परसेंट बरबाद हो जाता है।

गवर्नमेंट की ओर से किसी काम के लिये जो estimate ठीक किया जाता है उस में contractors के लिये १५ परसेंट मुनाफा रखा जाता है। उसी के मुताबिक उनको मुनाफा दिया जाता है। लेकिन मैं तो कहूंगा कि इस डिपार्टमेंट में जितनी धांधली है उतनी धांधली किसी दूसरे सूबे में

नहीं है। इस महकमें में आज जितने बड़े २ अफसर हैं वे सब लोग कमीशन के रूप में कांट्रैक्टरों से रुपया लेते हैं। आज सर गणेशदत्त सिंह ने जो कुछ इस सम्बन्ध में कहा है वह मान्य नहीं है।

Dr. Sir GANESH DUTTA SINGH : Sir, is he entitled to accuse the officers from top to bottom ?

Mr. HARKISHORE PRASHAD : It is an open secret.

Dr. Sir GANESH DUTTA SINGH : Why don't you make a complaint ?

Mr. HARKISHORE PRASHAD : Before whom ?

Dr. Sir GANESH DUTTA SINGH : Before a magistrate for taking bribe.

Mr. JAMUNA KARJEE :

मैं समझता हूं कि वे इस बात को गलत कहते हैं। मैं तो इसके लिये प्रमाण पेश कर सकता हूं।

सर गणेश दत्त ने कहा है कि यदि वे घूस लेते हैं तो उनको मैजिस्ट्रेट के यहां क्यों नहीं भेजते। मैं तो कहता हूं कि मैं मजिस्ट्रेट के यहां क्यों जाऊं ? मैंने तो कहा है कि इस डिपार्टमेंट में जो काम होता है उसमें आधा रुपया बरबाद हो जाता है। अगर डाक्टर सर गणेश दत्त सिंह देखना चाहते हैं तो मैं उनको निमंत्रण दूंगा कि वे मिहरबानी करके हमारे साथ चलें। अभी मुजफ्फरपुर में जी० बी० बी० कालेजियट स्कूल में चौदह हजार रुपये में एक होस्टल बना है। अभी उसको एक साल हुआ है। लेकिन उसके नीचे का सीमेंट प्लास्टर उखड़ गया है और जमीन भी नीचे धंस गई है। उसी तरह वहां के हेडमास्टर के लिये जो क्वार्टर बना है उसकी भी यही हालत है और बहुत सी जगहों में ऐसे ही दृष्टान्त नजर आयेंगे।

दरभंगा मेडिकल स्कूल का जो मकान बना है उसके सम्बन्ध में मैं सरकार की जानकारी के लिये कुछ कह देना चाहता हूं और इसकी जानकारी रखना और बहुत जरूरी है। ऐसा नियम है कि ठीकेदारों का १० प्रसेंट रुपया सरकार अपने हाथ में रखती है जो बरसात के बाद

काट कर को लौटा दी जाती है। चूंकि उसमें बड़े बड़े अफसर भी हिस्सेदार हैं वे लोग कोशिश करते हैं और वह ठीकेदार भी कोशिश कर रहा है कि १० परसेंट रुपया बरसात के बाद हो उसे लौटा दिया जाये। क्योंकि वह जानता है कि यह मकान एक साल से ज्यादा नहीं रहेगा, वह धंस जायगा। इसलिये वह कोशिश करता है कि जल्दी जल्दी वह रुपया मिल जाये। इस तरह सर गणेश को मैं बहुत सा मकान दिखलाऊंगा जहां पब्लिक फंड की बरबादी हुई है।

उस मुहकमे के अफसर बराबर यह कोशिश करते हैं कि ज्यादा से ज्यादा किसी प्रोजेक्ट में रुपया खर्च किया जाये। मैं एक मिसाल देना चाहता हूं। दरभंगा रोड का जो diversion हुआ है जहां पहले दरभंगा सड़क थी और वहां से कुछ दूर हटाई गई है। पूसा के निकट एक पुल था जिसमें एक लाख रुपया खर्च किया गया है। मैं तो कहूंगा नार्थ बिहार में इसतरह के बहुत से पुल हैं जिन में व्यर्थ का ज्यादे रुपया खर्च किया गया है। मैं तो कहूंगा कि इस पुल में इंजीनियरों की बेवकूफी से तीस हजार रुपया ज्यादे खर्च होरहा है। अगर यह पुल एक फर्लांग पूरब हट कर बनाया जाता तो मैं कहूंगा कि इसमें तीन हजार रुपये की बचत होती।

Dr. Sir GANESH DUTTA SINGH: Did you suggest the site ?

Mr. JAMUNA KARJEE:

मैं तो कहूंगा कि इंजीनियरों की आंखें बन्द नहीं थीं। उनको जांच करना चाहिये था कि कहां पर इस पुल को रखने से सरकार का रुपया कम खर्च होगा और लोगों को तकलीफ न होगी। वह पुल जहां अभी रखा गया है वह पहली सड़क से दो तीन फर्लांग आगे हटाया गया है। मैं तो कहूंगा कि यदि वह पहली ही जगह पर रहता तो दो एक आदमियों के घर को हटाना पड़ता लेकिन अब जो इसका साइट ठीक किया गया है उस में बीस पचीस घरों का हटाना पड़ेगा। पहली सड़क में जहां अढ़ाई हजार रुपया खर्च पड़ता वहां इस में बीस हजार रुपया खर्च लगा। मैं नहीं समझता हूं कि इसमें कौन सी बुद्धिमानी का काम किया गया है। अगर इसमें अभी भी थोड़ी बुद्धिमानी की जाय तो दस हजार रुपये की बचत हो सकती है। लेकिन

इंजीनियरों को इससे क्या फ़ायदा। उनको तो अपना कमीशन मिलना च हिए और ऐसा project बनना चाहिए जिससे उनको फ़ायदा हो। इसलिए मैं तो गवर्नमेन्ट से कहूंगा कि वह इस डिपार्टमेन्ट को अच्छी तरह से over-haul करे।

दूसरा कारण इस खराबी का बड़े २ कान्ट्रैक्टरों का इस डिपार्टमेन्ट में रहना है। मैं तो अपने भाई Mr. J. B. Sen से कहूंगा कि वे बिहार के कान्ट्रैक्टरों को ज्यादा तरजीह दें। कहा यह जाता है कि बिहार में capital नहीं है। यह बात बिल्कुल गलत है। बिहार में capital तो है लेकिन बिहारियों को तरजीह नहीं दी जाती है। मैं तो इसके लिए बहुत सा instances पेश कर सकता हूं। अभी तक इस डिपार्टमेन्ट में जितने contractors हैं वे पंजाब, सिंध, और गुजरात के हैं। वे लोग यहां आते हैं और रुपया उकार कर अपने घर चले जाते हैं। गवर्नमेन्ट को ऐसा इन्तज़ाम करना चाहिए जिससे बिहारी कान्ट्रैक्टरों को जगह मिले और ऐसा प्रबन्ध हो जिससे इस डिपार्टमेन्ट में जितने रुपये बर्बाद होते हैं और बेरहमी के साथ खर्च होते हैं वे सब ठीक तरह से खर्च हों।

तीसरी बात जो मुझ को कहनी है वह यह है कि उत्तर बिहार में भूकम्प के पहले जितने मकानात बने थे वे सब Public Works Department के द्वारा ही बने थे लेकिन इसके बाद उनमें एक भी मकान नहीं रहे। Original और repair दोनों के काम खराब होते हैं। इसलिए मैं गवर्नमेन्ट से कहूंगा कि वह इसके लिए एक enquiry कमिटी कायम करे, जो यह देखे कि इस डिपार्टमेन्ट के द्वारा कहां कहां काम हो रहा है और कैसा काम हो रहा है।

Mr. THAKUR RAMANANDAN SINHA:

माननीय सभापति जी, Public Works Department के बारे में जमुना बाबू ने जो कुछ शिकायत की है उसके साथ मेरी पूरी सहानुभूति है। मुझे भी एक शिकायत सीतामढ़ी H. E. School की building के बारे में करनी है। पिछली असेम्बली की बैठक के अवसर पर मैंने कुछ सवाल इस सम्बन्ध में किया था। उस समय सारंगधर बाबू वहां Parliamentary सेक्रेटरी की हैसियत से जांच करने गये थे और उनके

साथ Superintending Engineer भी थे। इस बात से सारंगधर बाबू को इन्कार नहीं होगा कि उस मकान में आधा से ज्यादा ईंट पीली लगी हुई है। उसमें पचीस हजार रुपया Government का खर्च हुआ है। मैं नहीं समझता हूं कि जिस काम में गवर्नमेन्ट इतना खर्च करती है और इसके पास इतने बड़े २ अफसर लोग काम करते हैं, फिर वह काम खराब हो जाता है और सरकारी रुपया बर्बाद हो जाता है ताहम उसको कोई देख भाल करने वाला नहीं रहता है।

दूसरी मिसाल जो मैं देना चाहता हूं वह सीतामढ़ी रोड के बारे में है। इस रोड में लगभग १२ लाख रुपये खर्च हुए हैं। इस काम के बारे में हमें बहुत सी शिकायतें थीं जिनको मैंने पिछली बैठक में प्रश्न के रूप में इस House के सामने पेश किया तो, जवाब मिला कि इस मामले में जांच होगी, लेकिन अभी तक जांच हुई या नहीं और अगर हुई तो उसका नतीजा क्या हुआ, अभी तक मालूम नहीं। मैंने देखा है कि इस रोड पर एक २ लचका जो cement concrete का बना हुआ है उसकी life २० और २५ वर्ष से अधिक की होनी चाहिए थी लेकिन बनने के १०-२० दिनों के बाद ही वह नष्ट होगयी। इसके लिये कौन दोषी है; सरकार ही बतलावे। मैं तो इस बात को जानकर हैरान हूं कि इतनी शिकायतें होने पर भी फिर इस साल उसी road को cement concrete से मेटल करने के लिये फिर लगभग १½ लाख रुपये मिले हैं गर्चे nation-building department के लिये जब रुपया मांगा जाता है तो सरकार बिलकुल अपनी असमर्थता बतलाती है। एक तरफ तो nation-building department के लिए रुपये के लिए चिल्लाहट हो रही है और दूसरी तरफ इस प्रकार गवर्नमेन्ट का रुपया पानी की तरह बहाया जारहा है। मेरी समझ में नहीं आता कि Government को इस बारे में क्या नीति है। यह जानी हुई बात है कि जब कभी इस तरह की शिकायतें होती हैं तो Government यह जवाब देती है कि अमुक अमुक experts की ऐसी राय है इसलिये कुछ भी हस्तक्षेप करना कठिन है।

लेकिन इन experts लोगों का काम जहां तहां ऐसा होता है जिसको कोई भी आदमी जाकर अगर देखे तो यही कहेगा कि ये लोग

गवर्नमेन्ट का रुपया बर्बाद करने के लिए रखे गये हैं। मेरे कहने का मतलब यह है कि अगर मौजूदा गवर्नमेन्ट भी इस मामले में दूसरे नुक़्तेनिगाह से काम नहीं लेगी तो पहले की गवर्नमेन्ट की तरह काम होता रहेगा, फिर change of Government का कोई मतलब नहीं रहजायगा।

एक बात मुझे और कहनी है और वह है महनार रोड के बारे में। इस रोड की हालत भूकम्प के कारण बहुत ही खराब होगई है। मुझे आश्चर्य है कि दूसरी सडकों पर जहां १२-१३ लाख रुपया पानी के ऐसा बहाया गया है मगर यह सड़क अभीतक उसी अवस्था में पडी हुई है। महनार रोड की यह बदकिस्मती है कि इस रोड पर अभी तक न तो गवर्नमेन्ट का ही ध्यान गया है और न district board का ही।

Mr. MAHESH PRASHAD SINHA: Sir, we are discussing the bad type of works done these days and not that the district board or Government did not make any provision for this work.

Dr. SACHCHIDANANDA SINHA: You are sheltering your district board.

THAKUR RAMNANDAN SINHA:

इसके कहने का मेरा मतलब यह है कि एक तरफ़ जरूरत से ज्यादे रुपया बर्बाद हो रहा है और दूसरी तरफ़ जहां सड़क की ज़रूरत है वहां नहीं बनाई जाती। इसलिये मैं ने कहा है कि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और गवर्नमेन्ट दोनों को इस ओर ध्यान देना चाहिये।

The Hon'ble the SPEAKER: Why does the hon'ble member talk of that matter again? That is over now.

THAKUR RAMNANDAN SINHA:

मैं इसलिये कह रहा हूं कि भूकम्प (earthquake) के बाद सड़कों को pre-earthquake condition में लाने के लिये जो कुछ रुपया मिला है वह गवर्नमेन्ट से ही मिला है।

महनार के लोगों ने भी गवर्नमेन्ट के पास representation दिये और उनके उच्च कर्मचारियों के पास जाकर बहुत दण्ड बैठक किये, तो कहा गया कि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के पास जाओ। जब डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के पास गये तो वहां

साथ Superintending Engineer भी थे। इस बात से सारंगधर बाबू को इन्कार नहीं होगा कि उस मकान में आधा से ज्यादा ईंट पीली लगी हुई है। उसमें पचीस हजार रुपया Government का खर्च हुआ है। मैं नहीं समझता हूं कि जिस काम में गवर्नमेन्ट इतना खर्च करती है और इसके पास इतने बडे २ अफसर लोग काम करते हैं, फिर वह काम खराब हो जाता है और सरकारी रुपया वर्बाद हो जाता है ताहम उसको कोई देख भाल करने वाला नहीं रहता है।

दूसरी मिसाल जो मैं देना चाहता हूं वह सीतामढ़ी रोड के बारे में है। इस रोड में लगभग १३ लाख रुपये खर्च हुए हैं। इस काम के बारे में हमें बहुत सी शिकायतें थीं जिनको मैंने पिछली बैठक में प्रश्न के रूप में इस House के सामने पेश किया तो, जवाब मिला कि इस मामले में जांच होगी, लेकिन अभी तक जांच हुई या नहीं और अगर हुई तो उसका नतीजा क्या हुआ, अभी तक मालूम नहीं। मैंने देखा है कि इस रोड पर एक २ लचका जो cement concrete का बना हुआ है उसकी life २० और २५ वर्ष से अधिक की होनी चाहिए थी लेकिन बनने के १०-२० दिनों के बाद ही वह नष्ट होगयी। इसके लिये कौन दोषी है; सरकार ही बतलावे। मैं तो इस बात को जानकर हैरान हूं कि इतनी शिकायतें होने पर भी फिर इस साल उसी road को cement concrete से मेटल करने के लिये फिर लगभग १½ लाख रुपये मिले हैं मगर nation-building department के लिये जब रुपया मांगा जाता है तो सरकार बिल्कुल अपनी असमर्थता बतलाती है। एक तरफ तो nation-building department के लिए रुपये के लिए चिल्लाहट हो रही है और दूसरी तरफ इस प्रकार गवर्नमेन्ट का रुपया पानी की तरह बहाया जारहा है। मेरी समझ में नहीं आता कि Government की इस बारे में क्या नीति है। यह जानी हुई बात है कि जब कभी इस तरह की शिकायतें होती हैं तो Government यह जवाब देती है कि अमुक अमुक experts की ऐसी राय है इसलिये कुछ भी हस्तक्षेप करना कठिन है।

लेकिन इन experts लोगों का काम जहां तहां ऐसा होता है जिसको कोई भी आदमी जाकर अगर देखे तो यही कहेगा कि ये लोग

गवर्नमेन्ट का रुपया बर्बाद करने के लिए रखे गये हैं। मेरे कहने का मतलब यह है कि अगर मौजूदा गवर्नमेन्ट भी इस मामले में दूसरे नुक़्तेनिगाह से काम नहीं लेगी तो पहले की गवर्नमेन्ट की तरह काम होता रहेगा फिर change of Government का कोई मतलब नहीं रहजायगा।

एक बात मुझे और कहनी है और वह है महनार रोड के बारे में। इस रोड की हालत भूकम्प के कारण बहुत ही खराब होगई है। मुझे आश्चर्य है कि दूसरी सड़कों पर जहां १२-१३ लाख रुपया पानी के ऐसा बहाया गया है मगर यह सड़क अभीतक उसी अवस्था में पड़ी हुई है। महनार रोड की यह बदकिस्मती है कि इस रोड पर अभी तक न तो गवर्नमेन्ट का ही ध्यान गया है और न district board का ही।

Mr. MAHESH PRASHAD SINHA: Sir, we are discussing the bad type of works done these days and not that the district board or Government did not make any provision for this work.

Dr. SACHCHIDANANDA SINHA: You are sheltering your district board.

THAKUR RAMNANDAN SINHA:

इसके कहने का मेरा मतलब यह है कि एक तरफ़ जरूरत से ज्यादे रुपया बर्बाद हो रहा है और दूसरी तरफ़ जहां सड़क की ज़रूरत है वहां नहीं बनाई जाती। इसलिये मैं ने कहा है कि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और गवर्नमेन्ट दोनों को इस ओर ध्यान देना चाहिये।

The Hon'ble the SPEAKER: Why does the hon'ble member talk of that matter again? That is over now.

THAKUR RAMNANDAN SINHA:

मैं इसलिये कह रहा हूं कि भूकम्प (earthquake) के बाद सड़कों को pre-earthquake condition में लाने के लिये जो कुछ रुपया मिला है वह गवर्नमेन्ट से ही मिला है।

महनार के लोगों ने भी गवर्नमेन्ट के पास representation दिये और उनके उच्च कर्मचारियों के पास जाकर बहुत दफ़े बैठक किये, तो कहा गया कि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के पास जाओ। जब डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के पास गये तो वहां

जवाब मिला कि गवर्नमेन्ट से रुपया मिलेगा तो आप लोगों के representation का ख्याल किया जायगा। मैं नहीं समझता कि आखिरकार इसका क्या इलाज़ है। गवर्नमेन्ट डिस्ट्रीक्ट बोर्ड पर टालती है और डिस्ट्रीक्ट बोर्ड गवर्नमेन्ट पर टालती है। यह तो एक ऐसा बेढंगा सिलसिला है, जिसमे दब कर बेचारे देहाती कहीं के न रहेंगे। एकही ज़िला में इस प्रकार एक जगह के लोगों के लिये step-motherly treatment हो, यह Government को शोभा नहीं देता। आशा है कि Government मेरी उपरोक्त शिकायतों के ऊपर विचार करेगी और आगे के लिये कोई सुगम मार्ग निकालेगी।

Mr. MAHESH PRASHAD SINHA:

सभापति महोदय, ठाकुर रामानन्द सिंह ने अभी कहा है कि खराब काम किया जाता है। इसके बारे में मेरा कोई मतभेद नहीं है। अगर कहीं खराब काम किया जाता है तो गवर्नमेन्ट और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का फ़र्ज़ है कि उस खराब काम को बन्द करे और उस पर काफ़ी निगहबानी करे कि खराब काम न हो; इसमें मैं उनके साथ हूं। लेकिन उन्होंने कुछ ऐसी बातें कहीं है जो उनके लिये मुनासिब नहीं थी। ठाकुर साहब ने कहा है कि सीतामढ़ी सड़क पर पानी की तरह से रुपया बहाया जाता है। ठाकुर साहब भी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर हैं। यही ठाकुर साहब हैं जिन्होंने कुछ दिन पहले डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अन्दर और बाहर यह आवाज बुलन्द की थी कि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और गवर्नमेन्ट को जितना रुपया इस रोड पर खर्च करना चाहिये उतना रुपया नहीं खर्च कर रहे हैं। यदि ठाकुर साहब इसी बात को आज भी कहते तो हम इसको समझ सकते थे। ठाकुर साहब यह कहते कि ठीकेदार ने काम खराब किया है तो यह एक बात होती। लेकिन आज यह लान्छन गवर्नमेन्ट पर है जिसने सीतामढ़ी सड़क के लिये रुपया दिया है। चूंकि बाढ़ के ज़माने में सीतामढ़ी और मुज़फ्फरपुर के बीच में पानी जमा होजाता है और आने जाने में कठिनाई होती है इसलिये गवर्नमेन्ट ने रुपया खर्च करके आने जाने की जो दिक्कत है उसको हल कर दिया है।

THAKUR RAMNANDAN SINHA: On a point of personal explanation, Sir.

हमने आज तक कभी भी नहीं कहा कि सीतामढ़ी road के लिये रुपया नहीं मिला है। मेरी तो बराबर यह शिकायत रही है कि इस road के लिये जो कुछ रुपया Government की ओर से मिला है, उसका ज्यादे हिस्सा बर्बाद हुआ है और आज भी मेरी वह शिकायत अपनी जगह पर ज्यों की त्यों है।

Mr. RAMCHARITRA SINGH: Sir, is this House a place to engage in domestic quarrels?

Mr. MAHESH PRASHAD SINHA:

हमतो कहेंगे कि इस House में मेम्बर की हैसियत से जो privilege मिला है उसका दुरुपयोग हुआ है।

THAKUR RAMNANDAN SINHA: I take objection to what he has said just now, Sir.

Mr. MAHESH PRASHAD SINHA: On the point of personal explanation, Sir.

मैं ने जो कहा है वह ठीक है या नहीं इसका फैसला करना तो सभापति जी का काम है। लेकिन ठाकुर साहब ने जो कुछ भी इल्ज़ाम लगाया है वह इल्ज़ाम इस बात का है कि मुज़फ्फरपुर district board को रुपया तो काफी मिला लेकिन उसने रुपये को बर्बाद कर दिया है। यह इल्ज़ाम बिल्कुल गलत और बेबुनियाद है।

Mr. RAMCHARITRA SINGH: But he did not make it clear, Sir.

Mr. MAHESH PRASHAD SINHA:

हम तो इस House के सामने अर्ज कर रहे थे कि अगर मुज़फ्फरपुर district board ने कोई काम खराब किया तो हमारे दोस्त ठाकुर साहब ने हमलोगों का ध्यान उस ओर आकर्षित क्यों नहीं किया। उन्होंने कभी भी कोई खबर खराब काम होने की निस्बत डि० बो० को नहीं दी।

The Hon'ble the SPEAKER: The district board is not under discussion. What Thakur Ramnandan Sinha said was that Government should have given sufficient money for different works and should have exercised sufficient supervision over certain works. He did not make any complaint against any particular district board.

Dr. SACHCHIDANANDA SINHA:

इस क़ानूनी झगड़े में हमलोग क्यों पड़ रहे हैं।

Mr. MAHESH PRASHAD SINHA:

चूंकि ठाकुर साहब ने खास तौर से इल्ज़ाम लगाया है कि सीतामढ़ी सड़क पर जो रुपया खर्च किया गया है वह पानी की तरह बहाया गया है। इसकी जवाबदेही district board पर आती है। इसलिये district board ने जो कुछ भी किया है उसका कह देना जरूरी हो जाता है और जो कुछ भी मैंने कहा है वह केवल इस House के information के लिये है।

ख़ैर, अब रही बात कि ठाकुर साहब ने कहा है कि Public Works Department का काम खराब होता है और उन्होंने दृष्टांत में सीतामढ़ी स्कूल का नाम लिया है। हम जानते हैं कि Public Works Department में बहुत से ऐसे काम होते हैं जिनका ठिकाने से supervision न होने की वजह से जिस standard का काम होना चाहिये नहीं होता है। लेकिन इस तरह खड़े होकर किसी department का general condemnation करना उचित नहीं मालूम होता है।

Mr. RAMASHIS THAKUR:

सभापति महोदय, अभी ठाकुर साहब और कारजी साहब ने Public Works Department के बारे में आपके सामने जो शिकायतें पेश की हैं; हो सकता है कि वे सच्ची हों। लेकिन मुझे इसका तजर्बा नहीं है। मैं एक वाक़या आपके सामने बयान कर देना चाहता हूं। हमारे सामने ही एक बार एक को-आपरेटिव डिपार्टमेन्ट और पी० डबल्यू० डी० के ओवरसियरों में आपस में झगड़ा हो गया। पी० डबल्यू० डी० के ओवरसियर ने को-आपरेटिव के ओवरसियर से कहा कि तुम्हारा डिपार्टमेन्ट हमारे डिपार्टमेन्ट का मुकाबिला नहीं कर सकता है, तुम्हारा डिपार्टमेन्ट तो चोर है। इसपर को-आपरेटिव डिपार्टमेन्ट के ओवरसियर ने कहा कि तो तुम्हारा डिपार्टमेन्ट कम चोर नहीं है। इसके जवाब में पी० डबल्यू० डी० के ओवरसियर ने कहा कि हमारे डिपार्टमेन्ट को चोर कह कर अपमानित न करो, my department is not thief but dacoit. इसीसे मालूम होता है

कि पी० डबल्यू० डी० कहां तक काम करता है। हमारे पास कुछ ठीकेदारों ने आकर कलप कलप कर कहा कि बहुत जल्दी Council में जाकर कहिये कि यातो यह department एक दम उठा दिया जाय या इसमें सुधार किया जाय।

यही सब दिक्कतें हैं जिनको मैं ने गवर्नमेन्ट के सामने पेश कर दिया है। इसका मुझे ज़ाती तजुर्बा नहीं है। ये बातें serious हैं, चाहे गवर्नमेन्ट इस department को उठादे चाहे इसमें सुधार करे।

Mr. ABDUL MAJEED:

هم بهی منه میں زبان رکهتے هیں
کاش پوچهو تو مدعا کیا هے

سول ورک ڈپارٹمنٹ کے building repairing کے متعلق آپ سے عرض کرنا هے کہ آج تک جتنی بلڈنگ بنتی رهي هین اسکا هر اعتبار سے تجربه تو مجهلوگوں کو نہیں هے لیکن Mr. Jamuna Karjee نے اپني معلومات کی بنابر اُسکا صحیح نقشه کهینچا هے - مرقیهاري میں جو مکانات زلزله کے بعد بنائے گئے هیں ان بلڈنگوں کو دیکهکر یه نتیجه نکالا جا سکتا هے که شاید اس ڈپارٹمنٹ کے لوگوں نے یه سمجها هے که هندوستان کے کسی طبقه کے لوگوں کو پرده observe کرنیکی ضرورت نہیں هے مکانات اس طریقه سے بنائے گئے هیں که خاصکر انلوگوں کو جو پرده observe کرتے هیں سخت تکلیف هو رهی هے یه مکانات انهیں لوگوں کے لئے بهتر هے جو پرده observe نہیں کرتے هین لوهاتا اور بیگم پور کے جو دو افسران هیں یعنی منصف اور ڈسٹرکٹ سب رجسترار ان کے لئے جو کوارٹر بنے هیں وه اسقدر نا کافي اور تکلیفده هیں که بیان نہیں کیا جا سکتا - وهاں کے ڈسٹرکٹ سب رجسترار اور منصف صاحبان نے درخواستیں بهجیں هیں اور اپنے تکلیف کا اظهار کیا هے بلکه یہی نہیں ان لوگوں کی تکلیفوں کو دیکهکر وهاں که دو هندوستاني کلکٹر صاحبوں نے Executive Engineer کو لکها مگر ان کے لکهنے پر بهي صاحب بهادر نے کوئي توجه نہیں کی آخر میں اس اسمبلی کے ایک ممبر نے جو ان لوگوں کی تکلیفوں سے واقف تهے Superintending Engineer کو لکها تو انہوں نے مہربانی کرکے اتنا کیا که جو کافی accommodation نہیں تها اسکے لئے ایک temporary hut بنانیکی اجازت دیدی لیکن اسکے ساتهه ساتهه

یہ بھی لکھا کہ جبتک گورنمنٹ extension کی اجازت نہ دیگی اسوقت تک کچھ نہیں کیا جا سکتا ہے - اسلئے گورنمنٹ سے میری گزارش ہے کہ ان کی تکلیفوں کا خیال کرکے جلد از جلد توجہ کرے اور خصوصاً ان دو افسران کی تکلیفوں کو دور کرے - مجھے ایک بات اور عرض کرنی ہے وہ یہ ہے کہ ان دو افسران کا grade وہاں کے Supervisor صاحب سے کم نہیں ہے بلکہ بہت اونچا ہے لیکن Supervisor صاحب کا کوارٹر ان سب کوارٹروں سے بہت بہتر ہے شاید اسکی وجہ یہ ہوگی کہ وہ چونکہ اس ڈپارٹمنٹ کے ایک افسر ہیں اور وہاں کے مالک ہیں اونکو اختیار ہے کہ انہوں نے جس قسم کا کوارٹر چاہا بنوا لیا - اس میں کسی کو objection کرنے کا اختیار نہیں ہے - بہرکیف میری گذارش ہے کہ سردست ان دو افسران کی تکلیفوں کو دور کریں اور جو نا کافی accommodation ہے اسکو کافی بنانے کی کوشش کریں - District Sub-Registrar اگر grade کے لحاظ سے کہا جائے تو سب ڈپٹی کے گریڈ سے کم نہیں اور Gazetted Officer بھی ہے مگر شاید اس امر میں Supervisor کے گریڈ سے بھی نیچا سمجھا گیا ہے جو قابل افسوس ہے - اس لئے میں گذارش کرونگا کہ گورنمنٹ District Sub-Registrar اور Munsiff کے کوارٹرس کو اُنکی ضرورت کے مطابق آرامدہ بنانے کی کارروائی کرے کیونکہ کسی کو زبردستی Government quarters میں رکھنا اور کافی کرایہ وصول کرنا مگر اس کی سہولت و آرام کا سامان بہم نہ پہونچانا کسی طرح قابل تعریف نہیں ہو سکتا ہے -

Dr. Sir GANESH DUTTA SINGH: Sir, may I just say a few words regarding this department which was under me for 14 years?

Mr. HARIKISHORE PRASHAD: For how many years?

Dr. Sir GANESH DUTTA SINGH: For 14 years, Sir. The charge which is levelled against this Public Works Department and all its officers indiscriminately is quite unjustified. There are bad officers everywhere. If commission is taken in one place, bribery is taken in another. But the department on the whole, is above this charge. It is quite possible that there may be some officers whose conduct cannot be defended.

As regards the question of negligence in supervision, my point is that it may be true to some extent, because the supervision of all the works is too heavy for one officer, though supervision is done as far as practicable. There may be mistakes; mistakes are bound to occur. The munsiff passes one judgment, the subordinate judge on appeal another, the High

Court a third, and the Privy Council a fourth. They all honestly believe that certain decisions on certain facts are correct and on that basis they pass the judgment. You could not say that the lower courts were careless. So, it would appear that if a mistake occurs, it is a mere mistake and nothing more. I know, buildings after buildings have tumbled down. The cause was due to the defect of the under-ground soil. The underground soil was examined; say, up to the depth of 10 feet, but something wrong happened with the soil beyond that depth, and due to presence of black cotton soil the buildings cracked. It cannot be said from this that there has been dishonesty any where on the part of the officers of the Public Works Department. My hon'ble friend, Babu Jimut Bahan Sen, knows it full well, being in charge of district boards, what is the nature of these mistakes and how they cause loss to Government, to district boards, and to the Department. But can it be said that they are really mistakes? Now, Sir, just now it has been said that bad site is selected. I personally know that they do not select bad sites, because there is no advantage either to themselves or to Government if they do so. But you call it a mistake, because you look at the question from one point of view, whereas they look at it from a different point of view. I know, Sir, Babu Jimut Bahan Sen, himself complained to me that a bad site was selected and afterwards it was admitted that it was not a bad site.

My submission is that if you accuse those officers, you accuse yourself Who are those officers? Do you say that they are dishonest? All are your own educated men whom you are anxious to employ.

Mr. JAMUNA KARJEE: All are thieves and dacoits.

Dr. Sir GANESH DUTTA SINGH: Those B. C. Es. who came out of the Engineering College are dacoits and thieves. If this is your opinion, then educated people should be brushed aside altogether. Engineers are dacoits and Doctors are dacoits, all are dacoits except some of the hon'ble members of this House (*Hear, hear*). (*Voices —All members are dacoits*). No, I cannot say that all members are dacoits, I am also a member. My submission is this, Sir, that this sort of thing is not to be encouraged. You are all saying that you have got national Government. Do you mean that the national Government knowing all these things have not been able to do anything for the last 8 months? Do you want that all these officers should be turned out and the Department should be abolished, so that there will be no bad buildings? I may tell my friend, Sir, that there was a Retrenchment Committee of which I was a member and this question of Public Works Department was discussed there for days together. I was not a Minister then. I tried all the means and methods how to improve the work cheaply, but it was found that the Public Works Department was the best Department. Repairs question was considered and a lump sum was given to the District Officers for the repair of the buildings. The result was that the work was spoiled. It was found that the Public Works Department was a very expensive Department and, therefore, it was decided that all the police buildings should be built by the Sub-Inspectors. After two or

three years the whole thing was spoiled and the Public Works Department refused to repair all these buildings. So my submission is that there is no good condemning the Department because it is a responsible Department. If the construction of a building is bad, your Minister can ask the men in charge why the building was spoiled. But if you will entrust the work to some other irresponsible men, the work will be spoiled. You think that the Public Works Department is spoiling every thing, but that is not actually the case. Sir, when I was a Minister, several members of the House or it was then constituted came to me and said that there must be some cut in the Public Works Department budget and there was some bargaining going on as to what should be the amount of cut. I did not understand the position whether the Public Works Department was a wasteful Department or was doing any good work. After some 7 or 8 years' experience I discovered that this is the only Department for the poor people, for whom you all say that they are starving and so on and so forth. This question struck me when I stood at the top of the New Viceregal Palace at Delhi then under construction. I put a question to myself: is all the money wasted? After some consideration I came to the conclusion that it was not so. I found there very large number of labourers working who were all well paid. You say in a building some 20 to 30 thousand rupees is spent. But where does the money go? But I say, who has made the bricks—very poor people who work day and night to make bricks. Who has burnt the lime—the same very poor people. Who are constructing the buildings—the poor people. If you add all these, then you will see what amount goes to those poor people. I say not less than 40 *per cent* of the money goes to the extremely poor people who want some work. Then comes the question of plan and construction. For construction work your Engineers and others are paid and so you cannot say that the money is wasted. If you turn them out your unemployment will increase. Barring a few at the top who are responsible for estimates and planning, their work is to supervise the buildings as properly planned and estimates as properly prepared and buildings as constructed. You cannot leave these works in the hands of the juniors. You just said that contractors come from other provinces. What do you mean by that? Do you mean that your contractors are more honest. I say your contractors will be just of the same type as contractors of other provinces. You have your contractors, I have no objection, but you cannot say that all those contractors who come from other provinces are dishonest and they should not be trusted with the work. The profit is divided between your labourers and your engineers. You say that 40 *per cent* or 50 *per cent* of the money is wasted—certainly not. If you examine all the items of a building, there may be found some base materials and some wastage, but my submission is that it is quite wrong to accuse the Department. This is a great discouragement to the Department. If you have any complaint, just go to the Hon'ble Minister in charge of Public Works Department and tell him every thing, and I am sure he will give the case his best consideration. I do not understand why those who belong to his party should criticise Government.

Mr. MUHAMMAD YUNUS : They say what they feel. They are honest men.

Dr. Sir GANESH DUTTA SINGH : I do not say anything about honesty and dishonesty. My submission is that as far as Public Works Department is concerned I do not find much wrong with it. After some time when your engineers will be trained, they will also become Chief Engineer, Executive Engineer, and so on. When you find any thing wrong with any Assistant Engineer, you go to him and tell him that your reputation is bad and you must improve yourself, but it is not proper to discuss him in the Assembly. This will be a great discouragement to him. This news will be reported in papers and what will others people think. They are honest officers of Government. If they are dishonest, do not humiliate them in this way. That is all I have to say.

Mr. JIMUT BAHAN SEN : Sir, I feel greatly handicaped at the absence of my chief who is lying in bed, in having to speak on the various charges which have been made against the Public Works Department Sir, I might say that the charges which Mr. Jamuna Karjee has brought before the House—at least some of them—are very vague charges. They are not specific or definite. I must admit, however, that there is a large room for improvement in the Public Works Department, but that is so in other Departments as well. But certainly Public Works Department has much room for improvement in various ways. I mean in the administration, execution of work and in the mattter of giving out contracts. If hon'ble members would bring up specific complaints, certainly we would see to them. Mr. Jamuna Karjee complains about the location of a bridge site and he admits that the Hon'ble the Finance Minister has promised to look into the matter and in fact he has taken action in the matter. Of course, it is very difficult to say at present whether Mr. Jamuna Karjee is correct about this particular site or the engineers who have selected the site are correct. Any way the matter is being seen into and certainly if there be any objectionable feature that objectionable feature will be removed.

Mr. Jamuna Karjee has characterised this Department as a Public Waste Department. It is not a new nomenclature. It has been considered to be a Public Waste Department for a very long time. I am a member of Government now, but in my time when I was not a member, I had also characterised this Department as a Public Waste Department (*Hear, hear*). I am very much obliged to hon'ble Sir Ganesh Dutta Singh for having defended the Department. I also find that much of the criticisms which I had made when I was just a non-official member, I cannot do now being a Government member (*Laughter*).

Mr. HARIKISHORE PRASHAD : Do you see both sides of the picture ?

Mr. JIMUT BAHAN SEN: Of course, I can see both sides of the picture. I have been connected with the district board and derived a thorough knowledge of the working of estimates and contracts. I know what is required for execution of work, I can deal with these in an easy manner. However, Sir, I am trying my best to improve the condition of the Department in the light of experience that I have gained in the district board. I would give you some example, Sir, as to how we are proceeding to effect an improvement in the department.

With regard to contract work I have found that the schedule of rates as existing in the Public Works Department is very high and we are now revising the schedule of rates. I assure hon'ble members here that after the schedule of rates in the Public Works Department has been revised, there will be a considerable saving in this department.

One thing is very much engaging our attention and which has cost the Public Works Department a large amount of money and that is the construction of steel bridges. Hitherto bridges have been made of steel only. Very few bridges have been constructed here in cement concrete and we are considering whether we cannot induce our engineers to design cement concrete bridges. If we are able to induce them, there will be a considerable saving. Babu Jamuna Karjee has mentioned about a building in Muzaffarpur having cracked and I believe Dr. Sir Ganesh has given him a correct answer. Although I have not seen the building myself, I may point out that the character of the sub-soil in North Bihar is very dangerous and, very likely, the surface is still sinking there and probably that may be the reason of this building cracking after its recent construction. I believe this character in the soil will be found all over in North Bihar. Incidentally I may mention that during the last earthquake although the town of Patna was greatly devastated and the buildings were a mass of ruin, the public works buildings, however, stood out and the credit for this must go to the Public Works Department that they really constructed a type of building which found to be earthquake proof. The Public Works Department must get credit for it. Sir, Babu Jamuna Karjee has said that there is a very bad practice prevalent amongst the officers of the Public Works Department to take commission or bribe from the contractors. Sir, he is aware and other members are also aware that Government has appointed a committee to look into corruption. If Babu Jamuna Karjee or any other member, or any member of the public will bring forward any specific complaint or even give information of any general nature before this committee, certainly this committee will look into it and Govrenment will do what is necessary in the matter according to the recommendation of the Corruption Committee.

Government have also appointed a Retrenchment Committee and they are considering what expenditures are superfluous and what can be curtailed, and if Babu Jamuna Karjee and other members of this House will give a scheme to Government or to this Retrenchment Committee, it will be considered. Sir, Babu Mahesh Prashad Sinha has given a suitable

reply to Thakur Ramnandan Sinha. I don't think I need touch the point raised by Thakur Sahib. Mr. Majeed has referred in his speech under his own motion at page 10 that the type of building provided for District Sub-Registrars at Futwah, Begumpur and Motihari according to him are uncomfortable and less commodious.

Mr. ABDUL MAJEED : Not according to me but according to those who are occupying the houses.

Mr. JIMUT BAHAN SEN : Sir, none of us like the house we stay in and we always think that had the house been a bigger one it would have been better.

Dr. Sir GANESH DUTTA SINGH : Sir, houses are built on admissible estimate and accommodation is admissible according to pay.

Mr. JIMUT BAHAN SEN : Sir, I was going to say that all these houses are built after certain types and types are decided by Government after a thorough enquiry. If the houses are not according to the types, certainly there would be more inconvenience. For houses meant for munsifs and Sub-Registrars there should not be any complaint; they are decent ones. If these are still uncomfortable Government cannot help it until Government change the type for a bigger one. I will certainly look into the matter and enquire what is the nature of the grievance. The other criticisms are of very general nature so far as they have been made by different members and there is not much for me to deal with them, but certainly Babu Jamuna Karjee and such other members who have spoken on this motion can trust us, I mean the Hon'ble Minister of Public Works Department and to some extent myself, to deal with this department and to effect improvement in this department. We are very much alive to the fact that it needs improvement and we shall do our best. I do not think the debate calls for any other statement.

Mr. JAMUNA KARJEE : What about Darbhanga medical school building about which there is a complaint?

Mr. JIMUT BAHAN SEN : I shall make enquiries.

THAKUR RAMNANDAN SINHA : What about the Sitamarhi High English School building?

Mr. JIMUT BAHAN SEN : I shall make enquiries about that also.

THAKUR RAMNANDAN SINHA : Enquiries have already been finished.

Mr. JIMUT BAHAN SEN : Probably, by the Education Department. I shall now make an enquiry and let you know.

Mr. JAMUNA KARJEE :

जनाब सदर मैं सर गणेश दत्त सिंह की दो एक बातों का जवाब देना चाहता हूं। उन्होंने कहा है कि इस डिपार्टमेन्ट में बहुत से आदमी हैं जो बहुत इमान्दार हैं। मैंने कभी नहीं कहा है कि इस डिपार्टमेन्ट में जितने अफ़सर हैं वे सभी बेइमान हैं और सभी लोग घूस लेते हैं और कमीशन लेते हैं। कुछ अफसर जरूर अच्छे हैं। मालूम होता है कि इतने दिनों तक आप का जो इस मुहकमे से ताल्लुक रहा है और यहां के इंजीनियरों के साथ जो इनकी गुफ्तगू हुई है तो इन लोगों ने उनके दिमाग में कुछ टेकनीकल बातें रख दी हैं। इसी से वे कहते हैं कि यहां की जमीन खराब होगी। उनका इसतरह कहना उनके ऐसे बड़े आदमी को शोभा नहीं देता। क्या चोर या डकैत हमारे प्रान्त में नहीं हैं। क्या पुलिस मुहकमे में चोर नहीं है, क्या उनके ऊपर निगरानी नहीं होती है। और अगर वे कसूर करें तो उन्हें सज़ा नहीं मिलनी चाहिए। मैं अभी तक नहीं समझता हूं कि सर गणेश दत्त सिंह ने कैसे कहा है कि यह डिपार्टमेन्ट सब से बढ़िया डिपार्टमेन्ट है। अभी तक मैंने ऐसी बात किसी से नहीं सुनी थी। मेरे लिए तो यह एक रहस्य की बात है। आपने कहा है कि इस डिपार्टमेन्ट में केवल ४० या ५० फी सदी रुपया बरबाद होते हैं, लेकिन मैं उनसे पूछता हूं कि क्या उन्होंने इस बात की जांच की है। अगर किसी ने जांच भी की है, तो वह वही आफ़िसर हैं, जिन पर यह charge लगाया गया है। उन्होंने यह बतलाया है कि मुन्सिफ के फैसले एक होते हैं तो जजों के फैसले दूसरे होते हैं। मैं तो उनसे अदब के साथ कहूंगा कि एक ही ईंट को कोई ओवरसियर बढ़िया कहता है तो एक्जेक्युटिव इंजीनियर उसको दूसरा बतलाता है, तो यह error of judgment नहीं तो और क्या कहा जा सकता है।

मैं बड़े अदब के साथ कहना चाहता हूं कि मैं ने जो प्रस्ताव असेम्बली के सामने उपस्थित किया है उसका यह मतलब नहीं है कि इस मिनिस्ट्री में मेरा अविश्वास है। मैं तो एक बात कहूंगा कि यहां हमारे मिनिस्टर चन्द रोज से आए हैं और उनको अभी सभी विभाग के मुतल्लिक पूरी जानकारी नहीं है।

अब मैं इस कट मोशन को आगे बढ़ाना नहीं चाहता हूं। मैं एक बात सर गणेश को बतलाना चाहता हूं। आज तक कोई भी बिहारी चीफ इंजीनियर

नहीं हुआ। मैं समझता हूं कि इसमें कोई बड़ी भारी साजिश है, बड़ा भारी षड़यंत्र है। ऐसे बिहारियों की कमी नहीं है जो इस पोस्ट के लायक हैं।

Sir, I beg leave of the House to withdraw the motion.

The motion was, by leave of the Assembly, withdrawn.

PROVISIONS FOR A BRIDGE OVER BALAN AT NARAHIA IN THE DISTRICT OF DARBHANGA.

Mr. MUHAMMAD SHAFI : Sir, I beg to move :

That the demand under this head be reduced by Rs. 10.

جناب صدر - اس سڑک کی حالت یہ ہے کہ مختلف جگہوں میں پل نہیں ہونیکی وجہ سے برسات کے زمانہ میں ایسا ہو جاتا ہے کہ اسپر کوئی سواری نہیں جا سکتی - اور ادمی نہیں گذر سکتے یہ سڑک دربھنگہ ضلع کے اوس حصہ میں ہے جہاں صرف یہی ایک سڑک (main road) ہے - اگر اسکے علاوہ کوئی دوسری سڑک ہوتی تب تو خیر میں سمجھتا کہ وہاں کے لوگ دوسری سڑک سے جا سکتے ہیں - اگر اپ دربھنگہ ضلع کے نقشہ (map) کو اٹھا کر دیکھینگے تو اپکو پتہ چلیگا کہ پورب واری اتر واری حصہ میں یہی ایک سڑک (road) ہے جس سے ایک تھانہ سے دوسرے تھانہ کو ایک گاؤنسے دوسرے گاؤن کو - ایک ضلع سے دوسرے ضلع کو تعلق ہے - اور پبلک کیلئے امدورفت کا یہی ایک راستہ ہے - یہاں بھی برسات میں اکثر سیلاب (flood) اجایا کرتا ہے جس کا نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ سارے برسات کے زمانہ میں لوگونکی تکلیف اور مصیبت بڑھجاتی ہے میرا خیال ہے کہ اگر حکومت ۱۰،۰۰۰ روپیہ دیدے تو ضرورت کے مطابق پل ہوجائے اور سڑک درست ہوجائے - اور وہان کے لوگونکو امن وعافیت ہو اور ایک جگہہ سے دوسری جگہ اسانی سے لوگ امدورفت کر سکین - پھولپراس تھانہ و لوکہا و لوکہی تھانہ مین ڈسٹرکٹ بورڈ کا یہی ایک شاہ راہ (main road) ہے جسکے ذریعہ سے اونکی امدرفت ہے -

اسلئے میری گذارش ہے کہ اس نظر انداز کئے ہوے علاقع کیطرف حکومت کافی دھیان دیگی اور اونکے عافیت اور ضرورت کا لحاظ کرتے ہوے روڈ فنڈ سے اس سڑک کی درستگی کیلئے روپیہ منظور کریگی -